रात्रि क्लास 20/12/68 शिवबाबा याद है?

गाया जाता है गोदरी में कलतार..... यह शरीर तो बड़ा है, इनमें है बाप। इनको गोदरी कहते हैं। तो कब यह राजाई भी पहन कर आते हैं। अभी तो ज्ञान की बातों में सभी बुद्धि चलती रहती है। क्या करें जो मनुष्यों को समझ में आवे। बाप तो है नॉलेजफुल। बीजरूप चैतन्य है। उनको ही नॉलेज है, यह चक्र कैसे फिरता है। ऋषियों-मुनियों से पूछा बाप को जानते हो? तो नेती-2 कहते हैं। म्युज़ियम में तो बड़े-2 अक्षरों में लिखना चाहिए। बेहद का बाप जिसको भगवान कहा जाता है उनके जीवन कहानी को कोई भी नहीं जानते। गायन करते हैं; परन्तु कब आए वह नहीं जानते। अज्ञान की नींद में सोए पड़े हैं। अभी तुम जानते हो हम भी बाप को नहीं जानते थे। आत्मा सितारा है यह भी कहते हैं। सुनी-सुनाई बात कह देते हैं। शास्त्र भी देहधारी मनुष्यों ने बनाई है ना। व्यास भगवान का कहें वा कृष्ण भगवान का कहें। भगवान तो है बाप। व्यास भगवान के शास्त्रों को बैठ बाप सिद्ध कर बताते हैं। कहा जाता है आटे में लून। दो-चार शब्द निकालेंगे। शिव पुराना भी है, उनमें भी कुछ न कुछ अक्षर निकाल कर देंगे। बच्चे समझते हैं बाप सभी वेदों-शास्त्रों का सार बताते हैं। कोई भी ऐसा शास्त्र नहीं है जिसमें हो भगवानुवाच मैं तुमको राजयोग सिखाये राजाओं का राजा बनाता हूँ। यह सतयुग के मालिक हैं ना। तो सिद्ध होता है भगवान ही आकर राजयोग सिखाते हैं। नई दुनिया स्थापन करते हैं। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। ऊँच बनने का युग। नर से ना॰, नारी से लक्ष्मी। उत्तम पुरुष तो और कोई है नहीं। परमात्मा बैठ तुमको उत्तम बनाते हैं। हरेक प्वाइंट है। कल्प 5000 वर्ष का है और राजयोग कोई मनुष्य सिखा नहीं सकते। तुम्हारी आत्मा सिखलाती है। लिखते हैं फलानी आत्मा लिखती है। तुम विद्या भी पढ़ते हो तो धारणा आत्मा में होती है। अंग तो सभी खत्म हो जावेंगे। बाकी संस्कार कौन ले जाती है? आत्मा पढ़ती है। यह बाप ने समझाया है आत्मा अमर है। कहेंगे–बुद्धि पढ़ती है; परन्तु बुद्धि किसमें है। शरीर की बुद्धि है या आत्मा की बुद्धि है? पतित वा पावन बुद्धि बनती है। आत्मा में मन-बुद्धि है तो आत्मा ही कहो ना। हमारी आत्मा इस समय पतित है; इसलिए बुलाते हैं। आत्मा गोल्डन एज है तो शरीर भी गोल्डन एज मिलता है। ऐसी-2 टॉपिक्स निकालनी चाहिए। हरेक अपने-2 टॉपिक उठा ले। ओरली बैठ समझावे। पढ़ने का नहीं है। ओरली। टाइम तो देते हैं ना फलाने का भाषण। फिर फलाने का भाषण होगा। लिखत में नहीं। पढ़कर सुनाना शोभता नहीं है। वह तो नेचरल नहीं हुआ ना। अच्छा नहीं है। बेबियाँ ऐसे करेंगे। बाबा क्या उठाते हैं। कुछ भी नहीं। बाबा गीता कितना पढ़ते थे। बूढ़े ही आकर सुनते थे। उस समय ज्ञान तो नहीं था। छोटेपन से प्रैक्टिस भी है। बाबा ग्रंथ भी पढ़ा हुआ है। बच्चों के पास अथाह धन है। सारा दिन बुद्धि चलना चाहिए कैसे किसको दान देवें। टॉपिक है ना। मुख्य बात सर्वव्यापी है। यह कहाँ से आया। गीता में अक्षर है। तुम कहेंगे बाबा से पूछा गया है गीता में यह आपने लिखा है क्या? कहा– नहीं बच्चे, यह मनुष्य मत है। भक्तिमार्ग में आधा कल्प मनुष्य मत, रावण मत है। अभी तुमको श्रीमत मिलती है। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को मनुष्य नहीं जान सकते। मैं ही सुनाता हूँ। आदि सनातन देवी-देवता धर्म किसने स्थापन किया यह भी कोई नहीं जानते हैं। आपे ही बोलते रहे। कृष्ण तो सतयुग का पहला प्रिन्स है। मनुष्य 84 जन्म लेते हैं। ऐसे-2 बहुत टॉपिक निकाल सेज(सहज) समझा सकते हैं। हमको भगवान क्या पढ़ाते हैं? शिव भगवान कैसे पढ़ाते हैं? बैल भी दिखाते हैं। रथ भी मशहूर है। भागीरथ। भाग्यशाली मनुष्य जिसमें बाप की प्रवेशता होती है। गंगा की बात नहीं। भगवान का रथ है। कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में प्रवेश करता हूँ। मेरे लिए कहते भी हैं दूर देश..... पतित तो सभी हैं। सभी पुकारते हैं पावन बनाने आओ। भगवान ऐसे समझाते हैं, मनुष्य ऐसे समझाते हैं। ऐसे-2 तुम समझानी देंगे यह तो अच्छा है ना। भगवान ने स्वर्ग कैसे स्थापन किया। शिवजयन्ती मनाते हैं तो बस उसकी ही महिमा बताते हैं। ऊँच ते ऊँच है भगवान। बाप भी है, टीचर भी है, फिर साथ भी ले जाते हैं। पतित दुनिया में देवताओं (का) पैर हो न सके। देवताएँ यहाँ हो न सकें। तुम बहुत युक्ति से समझा सकते हो। बहुत मजबूत चाहिए। शिवजय॰ के दिन ऐसे अपना बताओ शिवबाबा हमको क्या सिखलाते हैं। बेहद के बाप को तुम भूल गए हो। एक

ही बात सिद्ध कर दो तो कहेंगे यह तो राइट बताते हैं। यह सभी बातें तुम्हारी बुद्धि में चलना चाहिए। परिचय देना है, कहानी रोज़ सुनेंगे। न सुनेंगे तो कट हो जावेगी। सतयुग से लेकर कलियुग तक कैसे चक्र फिरता है रोज़-2 सुनावेंगे। न आवेंगे तो पढ़ाई कट हो जावेगी। यह सभी ख्यालात करनी है। शिवजयन्ती पर क्या-क्या समझाना है, जो मनुष्य समझे। हमको बाप आकर इस रथ द्वारा पढ़ाते हैं। हमारी आत्मा ही पढ़ती है। इसको रूहानी नॉलेज कहा जाता है। रूहानी बाप ने रूहानी बच्चों को सिखाया है। बुद्धि में धारण है। बाप बीजरूप है कृष्ण को कब पतित-पावन नहीं कहेंगे। सेमीनार बड़ा होगा। विचार-सागर-मंथन कर स्पीकर बनो। विश्व में शांति कैसे होती है? सतयुग से लेकर कलियुग तक क्या-2 होता है? तुम सुना सकते हो। विचार-सागर-मंथन करते रहेंगे तो बाप याद रहेगा। बुद्धि चलती रहेगी। हमको भाषण करना है। जीवन का कल्याण भी हो जावेगा। बच्चों को हरदम बाप ही याद आता है ना। कोई भी मनुष्य मात्र को यह पता नहीं होगा हम भविष्य में यह बनेंगे। प्रिन्स बनेंगे सो भी प्रिंस कौन सा? यह देवता तो मशहूर है। दूसरे भी बनेंगे ना। माला बनती है। बहुत बातें हैं। एकान्त में बैठते हैं तो भी यही बताना है बेहद का बाप हमको क्या सिखलाते हैं। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडनाइट और नमस्ते।